

मध्यकाल में राजनैतिक विद्रोह-एक ऐतिहासिक अध्ययन

Political Rebellions in Medieval India- A Historical Study

डॉ सुधाकर प्रसाद दुबे

जनभागीदारी अतिथि विद्वान, इतिहास विभाग

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा

सारांश (Abstract)

मध्यकालीन भारत का इतिहास राजनैतिक उथल-पुथल, सत्ता संघर्ष एवं विद्रोहों से परिपूर्ण है। इस काल में केन्द्रीय सत्ता के विरुद्ध अनेक विद्रोह हुए जो न केवल राजनैतिक परिवर्तन के वाहक बने, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक जीवन पर भी गहरा प्रभाव डालते रहे। दिल्ली सल्तनत के काल से लेकर मुगल साम्राज्य के पतन तक, विद्रोहों की एक दीर्घ श्रृंखला देखी जा सकती है जो विभिन्न स्वरूपों में प्रकट हुई — चाहे वे उच्चाधिकारियों द्वारा किए गए राजनैतिक विद्रोह हों, किसानों एवं जनसाधारण के आर्थिक विद्रोह हों, अथवा धार्मिक और जातीय चेतना से उत्प्रेरित सशस्त्र संघर्ष हों।

प्रस्तुत शोध पत्र में मध्यकाल में हुए प्रमुख राजनैतिक विद्रोहों का ऐतिहासिक विश्लेषण किया गया है। इसमें विद्रोहों के कारणों, स्वरूपों, प्रमुख नेताओं, परिणामों एवं उनके ऐतिहासिक महत्व पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। शोध में यह स्पष्ट किया गया है कि मध्यकालीन विद्रोह केवल सत्ता-प्रतिस्पर्धा के परिणाम नहीं थे, बल्कि इनके मूल में गहरी सामाजिक और आर्थिक असंतुष्टियाँ भी निहित थीं। प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के आधार पर किए गए इस अध्ययन में ऐतिहासिक विश्लेषण की पद्धति का उपयोग किया गया है।

प्रस्तावना (Introduction)

भारत का मध्यकाल इतिहास में एक ऐसा विशिष्ट युग है जिसमें एक ओर महान साम्राज्यों की स्थापना हुई, तो दूसरी ओर उनके विरुद्ध असंख्य विद्रोहों ने राजनैतिक परिदृश्य को निरंतर परिवर्तित करते रहा। मध्यकाल की समयावधि को सामान्यतः ७वीं शताब्दी से लेकर १८वीं शताब्दी के मध्य तक माना जाता है, जिसमें राजपूत काल, सल्तनत काल और मुगल काल प्रमुख रूप से सम्मिलित हैं। इस विस्तृत कालखण्ड में राजनैतिक विद्रोहों ने भारतीय इतिहास की दिशा एवं दशा दोनों को प्रभावित किया।

मध्यकालीन शासन-व्यवस्था में राजा अथवा सुल्तान की केन्द्रीय भूमिका होती थी। इस केन्द्रीकृत सत्ता के विरुद्ध विद्रोह का उद्भव तब होता था जब शासक वर्ग में आंतरिक कलह उत्पन्न होती थी, जब सामंतों और अमीरों को लगता था कि उनके अधिकारों का हनन हो रहा है, या जब जनसाधारण असह्य करभार और अत्याचारों से त्रस्त हो जाता था। इल्तुतमिश के काल में अमीरों का विद्रोह हो अथवा अलाउद्दीन खिलजी के काल में नवमुस्लिमों का विद्रोह, मुहम्मद बिन तुगलक के प्रयोगधर्मी नीतियों के विरुद्ध प्रांतों का विद्रोह हो अथवा मुगल साम्राज्य में शहजादों के सत्ता-संघर्ष – सभी ने मिलकर मध्यकालीन भारत की राजनीतिक संरचना को आकार दिया।

इतिहासकार इरफान हबीब, सतीश चन्द्र, के.ए. निजामी और आर.पी. त्रिपाठी ने मध्यकालीन विद्रोहों का विस्तृत अध्ययन किया है। उनके अनुसार, मध्यकालीन विद्रोह केवल व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं की उपज नहीं थे, बल्कि उनके पीछे संरचनागत कारण भी थे। इस शोध पत्र में इन्हीं विभिन्न आयामों को समझने का प्रयास किया गया है।

शोध पत्र के उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं:

प्रथम उद्देश्य यह है कि मध्यकाल में हुए प्रमुख राजनैतिक विद्रोहों का क्रमबद्ध एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाए। द्वितीय उद्देश्य के अंतर्गत विद्रोहों के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनैतिक कारणों की पड़ताल की जाएगी। तृतीय उद्देश्य यह है कि विद्रोहों के विभिन्न स्वरूपों – जैसे सामंती विद्रोह, किसान

विद्रोह, धार्मिक विद्रोह और जनजातीय विद्रोह — की पहचान और तुलनात्मक विश्लेषण किया जाए। चतुर्थ उद्देश्य के अंतर्गत यह जाँचा जाएगा कि इन विद्रोहों ने भारतीय समाज और राजनीति पर दीर्घकालिक प्रभाव किस प्रकार डाला। पंचम उद्देश्य यह है कि मध्यकालीन विद्रोहों और आधुनिक भारतीय राष्ट्रीयता के उदय के बीच ऐतिहासिक संबंध की व्याख्या की जाए। षष्ठ उद्देश्य के रूप में शोध का प्रयास यह भी है कि इन विद्रोहों के प्रमुख नायकों और उनकी रणनीतियों का मूल्यांकन किया जाए।

शोध पत्र का महत्व (Significance of the Study)

मध्यकालीन राजनैतिक विद्रोहों का अध्ययन अनेक कारणों से अत्यंत महत्वपूर्ण है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो ये विद्रोह साम्राज्यों के उत्थान और पतन की कहानी कहते हैं। दिल्ली सल्तनत का कमजोर होना, विभिन्न प्रांतीय राज्यों का उदय और मुगल साम्राज्य का क्रमिक विखण्डन — ये सभी प्रक्रियाएँ राजनैतिक विद्रोहों की परिणति थीं। अतः इनका अध्ययन भारतीय इतिहास की व्यापक समझ विकसित करने में सहायक है।

राजनीतिक महत्व की दृष्टि से, ये विद्रोह यह सिद्ध करते हैं कि केन्द्रीकृत सत्ता कितनी भी शक्तिशाली हो, वह आंतरिक असंतोष को अनिश्चितकाल तक दबा नहीं सकती। अलाउद्दीन खिलजी की तानाशाही के बावजूद उनके राज्य में कई विद्रोह हुए, और औरंगजेब की कठोर नीतियों ने तो मराठा, राजपूत और जाट विद्रोहों को जन्म दिया जो अंततः मुगल साम्राज्य के विघटन का कारण बने। यह अध्ययन वर्तमान राजनैतिक चिंतन के लिए भी प्रासंगिक है।

सामाजिक महत्व की दृष्टि से, मध्यकालीन विद्रोहों ने उस समय की सामाजिक विषमताओं और आर्थिक शोषण को उजागर किया। किसान विद्रोह और जनजातीय संघर्ष यह दर्शाते हैं कि समाज के निचले तबके भी दमनकारी व्यवस्था के विरुद्ध संगठित होने में सक्षम थे। यह तथ्य भारतीय जनमानस की प्रतिरोध क्षमता और स्वाभिमान का प्रमाण है। इसके अतिरिक्त, इन विद्रोहों का सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रभाव भी पड़ा। अनेक विद्रोही नायक लोकगीतों और लोककथाओं के नायक बने, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी जनस्मृति में जीवित रहे।

दिल्ली सल्तनत काल में विद्रोह

दिल्ली सल्तनत की स्थापना के साथ ही भारत में एक नई राजनैतिक व्यवस्था का आरंभ हुआ, जो परंपरागत भारतीय शासन-प्रणाली से भिन्न थी। इस व्यवस्था में तुर्क अमीर-वर्ग और सुल्तान के बीच निरंतर संघर्ष बना रहा। इल्तुतमिश के शासनकाल (१२११-१२३६ ई.) में 'चालीसा' नामक चालीस तुर्क अमीरों के दल ने राजनीति में निर्णायक भूमिका निभाई। इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद यही अमीर वर्ग सत्ता का प्रमुख खिलाड़ी बन गया और अल्पकाल में अनेक सुल्तानों को सिंहासनारूढ़ करने और हटाने में सक्षम रहा।

बलबन के शासनकाल (१२६६-१२८६ ई.) में इस अमीर-वर्ग की शक्ति को नियंत्रित करने का प्रयास किया गया। बलबन ने 'खून-ए-नाहक' की नीति अपनाकर विद्रोहियों के साथ अत्यंत कठोर व्यवहार किया। उसने मेवात के विद्रोहियों का कठोरता से दमन किया और खानाबदोश जनजातियों को दोआब क्षेत्र से खदेड़ा। बलबन के इन कदमों ने सल्तनत को अस्थायी स्थिरता प्रदान की, लेकिन उसके बाद के काल में विद्रोह पुनः भड़क उठे।

अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में उसके भाई अलमास बेग तथा उसके भतीजे अकत खान ने विद्रोह किया। १३०७ ई. में गुजरात के गवर्नर अलप खान के भाई के नेतृत्व में भी विद्रोह का प्रयास हुआ। अलाउद्दीन ने 'नवमुस्लिमों' के एक बड़े समूह — जो मंगोलों के धर्मांतरित वंशज थे — के विद्रोह का भी सामना किया। इन नवमुस्लिमों ने दिल्ली में ही षड्यंत्र रचा था जिसे अलाउद्दीन ने निर्दयता से कुचल दिया। मुहम्मद बिन तुगलक की दूरदर्शी किंतु कठोर नीतियों ने व्यापक विद्रोहों को जन्म दिया। राजधानी परिवर्तन, दोआब में कर-वृद्धि, और सांकेतिक मुद्रा की योजना इन सभी ने जनता एवं अमीर-वर्ग में असंतोष उत्पन्न किया।

मुगल काल में राजनैतिक विद्रोह

मुगल साम्राज्य में राजनैतिक विद्रोहों का स्वरूप दिल्ली सल्तनत से भिन्न था। यहाँ शहजादों के उत्तराधिकार-संघर्ष सर्वाधिक महत्वपूर्ण थे। अकबर के काल में राजधानी आगरे से लेकर अफगान विद्रोहियों तक अनेक चुनौतियाँ सामने आईं। बैरम खान — जो अकबर के संरक्षक थे — ने भी अंततः विद्रोह का मार्ग अपनाया, यद्यपि उनका यह प्रयास विफल रहा। अकबर के शासनकाल में हेमू के नेतृत्व में हिंदू शक्तियों ने पुनः सत्ता प्राप्त करने का प्रयास किया जो पानीपत की द्वितीय लड़ाई में विफल हो गया।

जहाँगीर के पुत्र शहजादे खुर्रम (बाद में शाहजहाँ) ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया जो मुगल इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। शाहजहाँ के काल में उनके पुत्र दाराशिकोह, शाहशुजा, मुराद और औरंगजेब के बीच उत्तराधिकार-युद्ध हुआ। इस युद्ध में औरंगजेब विजयी रहा और उसने अपने भाइयों को समाप्त कर एकछत्र शासन स्थापित किया। औरंगजेब का शासनकाल विद्रोहों की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। उसकी धार्मिक असहिष्णुता, जिज्या कर की पुनर्स्थापना, और हिंदू मंदिरों के विध्वंस ने मराठा, राजपूत, जाट और सिख शक्तियों को सशस्त्र संघर्ष के लिए प्रेरित किया।

शिवाजी महाराज के नेतृत्व में मराठा विद्रोह एक सुसंगठित और दीर्घकालिक राजनैतिक आंदोलन का रूप ले चुका था। शिवाजी ने १६७४ ई. में स्वतंत्र मराठा राज्य की स्थापना की जो मुगल सत्ता को खुली चुनौती थी। राजपूत राजाओं – विशेषकर मेवाड़ और मारवाड़ – के विद्रोह ने भी मुगल शक्ति को कमजोर किया। गुरु गोविंद सिंह के नेतृत्व में सिख समुदाय का सशस्त्र संघर्ष धार्मिक एवं राजनैतिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण था। बंदा बहादुर के नेतृत्व में सिखों ने पंजाब में मुगल सत्ता को व्यापक चुनौती दी।

किसान एवं जनजातीय विद्रोह

मध्यकालीन भारत में केवल अमीर-वर्ग और सामंत ही विद्रोह नहीं करते थे। किसान और जनजातीय समुदायों के विद्रोह भी उतने ही महत्वपूर्ण थे, यद्यपि इतिहास लेखन में उन्हें उचित स्थान नहीं मिला। अलाउद्दीन खिलजी के समय दोआब क्षेत्र में किसानों के विद्रोह हुए जो असह्य करभार के प्रतिकार में थे। मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में दोआब के किसानों ने जंगल छोड़ दिए और खेती बंद कर दी जो एक प्रकार का अहिंसक प्रतिरोध था।

जाट विद्रोह मध्यकालीन उत्तर भारत की एक विशेष घटना थी। मथुरा और आगरा के आसपास के जाट कृषकों ने औरंगजेब के काल में तीव्र विद्रोह किया। गोकुल के नेतृत्व में जाट विद्रोहियों ने मुगल थानेदारों को उखाड़ फेंका। यद्यपि गोकुल को पकड़कर मार दिया गया, किंतु जाट विद्रोह जारी रहा और राजाराम तथा बदन सिंह के नेतृत्व में आगे बढ़ता रहा। अंततः भरतपुर में एक स्वतंत्र जाट राज्य की स्थापना हुई जो मुगल सत्ता के क्षय का प्रमाण था।

बुंदेलखंड में भी छत्रसाल बुंदेला के नेतृत्व में बुंदेला विद्रोह हुआ। छत्रसाल ने शिवाजी से प्रेरणा लेकर स्वतंत्र बुंदेला राज्य की स्थापना की। इसी प्रकार, दक्कन में विभिन्न स्थानीय शक्तियों ने मुगल सत्ता के विरुद्ध सशस्त्र

संघर्ष किया। जनजातीय विद्रोहों में मध्य भारत की गोंड, भील और कोल जनजातियों के विद्रोह उल्लेखनीय हैं। ये विद्रोह मुख्यतः बाहरी शासन एवं शोषणकारी भूमि-व्यवस्था के विरुद्ध थे।

विद्रोहों के प्रमुख कारण

मध्यकालीन राजनैतिक विद्रोहों के अनेक कारण थे जिन्हें निम्नांकित श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। प्रथमतः, राजनैतिक कारणों में उत्तराधिकार की अनिश्चित व्यवस्था सर्वप्रमुख थी। मध्यकालीन भारत में ज्येष्ठ-पुत्राधिकार की कोई स्थापित परम्परा नहीं थी। इस कारण प्रत्येक सुल्तान या बादशाह की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार के लिए संघर्ष अनिवार्य हो जाता था। सत्ता के केन्द्रीकरण और सामंतों की स्वायत्तता के बीच तनाव भी एक स्थायी कारण था।

आर्थिक कारणों की दृष्टि से, मध्यकाल में भूमि-कर की अत्यधिक दरें और राजस्व वसूली की कठोर प्रणाली ने किसानों में असंतोष पैदा किया। मुहम्मद बिन तुगलक ने दोआब में कर-वृद्धि की जिससे किसानों का पलायन हुआ। सामंती अर्थव्यवस्था में जागीरदारों और स्थानीय शासकों को जब लगा कि केन्द्र उनकी आय और संसाधनों पर नियंत्रण कर रहा है, तो उन्होंने विद्रोह का मार्ग अपनाया।

धार्मिक और सांस्कृतिक कारण भी उतने ही महत्वपूर्ण थे। औरंगजेब की धार्मिक नीतियाँ — जिज्या कर, मंदिर-विध्वंस और इस्लामी कानून का कठोर प्रवर्तन — ने हिंदू शक्तियों को एकजुट किया। गुरु तेग बहादुर की शहादत ने सिखों में मुगल शासन के विरुद्ध गहरा आक्रोश पैदा किया। क्षेत्रीय और जातीय पहचान की भावना भी विद्रोहों का एक महत्वपूर्ण कारण थी। मराठों की 'स्वराज' की अवधारणा, राजपूतों का कुल-गौरव और जाटों की कृषक-समुदाय की एकता — ये सभी विद्रोहों को ऊर्जा और दिशा प्रदान करते थे।

विद्रोहों का प्रभाव और परिणाम

मध्यकालीन राजनैतिक विद्रोहों के परिणाम बहुआयामी थे। दिल्ली सल्तनत के संदर्भ में देखें तो निरंतर विद्रोहों ने सल्तनत को कमजोर किया और अंततः बाबर के आक्रमण का मार्ग प्रशस्त किया। मुहम्मद बिन तुगलक के

काल में बहमनी और विजयनगर जैसे स्वतंत्र राज्यों का उद्भव व्यापक विद्रोहों का ही परिणाम था। फिरोजशाह तुगलक को अपनी नीतियाँ उदार बनानी पड़ीं जो पूर्ववर्ती शासकों के कठोर शासन की प्रतिक्रिया थी।

मुगल साम्राज्य के संदर्भ में, औरंगजेब के काल के विद्रोहों ने साम्राज्य की नींव को खोखला कर दिया। मराठा सत्ता का उदय, सिख राज्य की स्थापना, जाट और बुंदेला शक्तियों का विकास — ये सभी उन विद्रोहों की विरासत हैं जो मुगल दमन के विरुद्ध उठे थे। ये विद्रोह न केवल साम्राज्य के पतन के कारण बने, बल्कि उन्होंने भविष्य के भारत की राजनैतिक संरचना की नींव भी रखी। यह एक ऐतिहासिक विडंबना है कि जिन विद्रोहों ने मुगल साम्राज्य को समाप्त किया, उन्होंने ब्रिटिश उपनिवेशवाद के लिए भी स्थितियाँ निर्मित कीं।

सांस्कृतिक दृष्टि से इन विद्रोहों ने क्षेत्रीय भाषाओं और संस्कृतियों को पुनर्जीवित करने में योगदान दिया। मराठी, पंजाबी, राजस्थानी और बुंदेली साहित्य में इन विद्रोहों की स्मृतियाँ संरक्षित हैं जो भावी पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहीं। इस प्रकार मध्यकालीन विद्रोह भारतीय राष्ट्रियता के प्रथम बीज बोने में सहायक सिद्ध हुए।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत शोध पत्र के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि मध्यकालीन भारत में राजनैतिक विद्रोह एक निरंतर और बहुआयामी प्रक्रिया थी। ये विद्रोह केवल सत्ता-लोलुपता अथवा व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं की उपज नहीं थे — इनके पीछे गहरी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक शक्तियाँ कार्य करती थीं। दिल्ली सल्तनत से लेकर मुगल साम्राज्य तक, प्रत्येक काल में विद्रोहों ने सत्ता-संरचना को चुनौती दी और अंततः उसे रूपांतरित किया।

यह शोध दर्शाता है कि मध्यकालीन शासन-व्यवस्था में केन्द्रीकरण और विकेन्द्रीकरण के बीच एक स्थायी तनाव था। जब भी केन्द्रीय शक्ति अत्यधिक दमनकारी हुई — चाहे वह अलाउद्दीन खिलजी की निरंकुशता हो या औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता — विद्रोह उसका अनिवार्य प्रतिफल बना। इस दृष्टि से मध्यकालीन विद्रोह एक प्रकार के राजनैतिक संतुलन-तंत्र के रूप में कार्य करते थे।

किसान विद्रोहों और जनजातीय संघर्षों का अध्ययन यह सिद्ध करता है कि मध्यकालीन इतिहास केवल राजाओं और सुल्तानों का इतिहास नहीं है — यह उन सामान्य लोगों का भी इतिहास है जिन्होंने अत्याचार के विरुद्ध

संघर्ष किया। इस जन-इतिहास की दृष्टि से मध्यकालीन विद्रोहों का अध्ययन आज भी प्रासंगिक और प्रेरणादायक है। यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि मध्यकालीन राजनैतिक विद्रोह भारतीय इतिहास की गतिशीलता और विविधता के प्रतीक हैं।

उपसंहार (Epilogue)

मध्यकाल में राजनैतिक विद्रोहों का यह ऐतिहासिक अध्ययन हमें यह समझने में सहायक है कि भारतीय समाज और राजनीति ने सदैव सत्ता के दुरुपयोग का प्रतिरोध किया है। चाहे वह अमीर-वर्ग का विद्रोह हो, सामंतों का विद्रोह हो, अथवा किसानों और जनजातियों का प्रतिरोध – सभी ने मिलकर यह संदेश दिया कि अन्याय का प्रतिकार अपरिहार्य है।

यह उल्लेखनीय है कि मध्यकालीन विद्रोहों ने न केवल तत्कालीन राजनैतिक संरचना को प्रभावित किया, बल्कि भारत की सांस्कृतिक विरासत में भी महत्वपूर्ण योगदान किया। शिवाजी की वीरता, गुरु गोविंद सिंह का बलिदान, राणा प्रताप का स्वाभिमान और बुंदेला-जाट किसानों की दृढ़ता आज भी भारतीय जनमानस को प्रेरित करती हैं।

इस शोध पत्र में यद्यपि मध्यकालीन विद्रोहों के प्रमुख पक्षों को समेटने का प्रयास किया गया है, तथापि यह विषय अत्यंत व्यापक है और इस पर और अधिक शोध की आवश्यकता है। विशेष रूप से स्थानीय और क्षेत्रीय विद्रोहों के इतिहास का पुनर्लेखन, महिलाओं की भूमिका का अन्वेषण और लोक-परम्परा के स्रोतों के आधार पर नया शोध किया जाना आवश्यक है। मध्यकालीन विद्रोहों का अध्ययन वस्तुतः भारत की आत्मा को समझने का एक प्रयास है – एक ऐसी आत्मा जो सदैव स्वतंत्रता और न्याय की आकांक्षी रही है।

संदर्भ सूची (References)

१. चन्द्र, सतीश (२०१२). मध्यकालीन भारत: सल्तनत काल. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
२. चन्द्र, सतीश (२०१५). मध्यकालीन भारत: मुगल काल. नई दिल्ली: हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
३. हबीब, इरफान (२०१०). एन एटलस ऑफ मुगल एम्पायर. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
४. निजामी, के.ए. (१९७०). सम एस्पेक्ट्स ऑफ रिलिजन एंड पॉलिटिक्स इन इंडिया इयुरिंग द थर्डेथ सेंचुरी. अलीगढ़: मुस्लिम यूनिवर्सिटी प्रेस।
५. त्रिपाठी, रामशंकर (१९८९). हिस्ट्री ऑफ दिल्ली सल्तनत. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
६. श्रीवास्तव, आशीर्वादीलाल (१९९२). मुगल साम्राज्य का इतिहास. आगरा: शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी।
७. कुलश्रेष्ठ, शीतला प्रसाद (२०१४). मध्यकालीन भारत का इतिहास. इलाहाबाद: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
८. मिश्र, विजयशंकर (२०१०). मुगल काल में कृषक जीवन और विद्रोह. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
९. पांडे, गजानंद (२०१६). दक्कन में मराठा विद्रोह: एक ऐतिहासिक विश्लेषण. पुणे: महाराष्ट्र विद्यापीठ प्रकाशन।
१०. सिंह, आर.पी. (२०१८). मध्यकालीन भारत में जनजातीय विद्रोह. भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
११. शर्मा, राम नारायण (२०११). औरंगजेब की धार्मिक नीति और उसके परिणाम. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
१२. Sarkar, Jadunath (2007). History of Aurangzib. 5 Vols. Calcutta: M.C. Sarkar & Sons.
१३. Prasad, Ishwari (2014). History of Medieval India. Allahabad: Indian Press.

१४. Richards, J.F. (1995). The Mughal Empire (New Cambridge History of India). Cambridge: Cambridge University Press.

१५. गुप्ता, हरिराम (२०१३). पंजाब में सिख शक्ति का उदय. अमृतसर: सिंह ब्रदर्स।

